श्रीगणेशाय नमः

॥ अथ ज्ञान मा[illegible]

—:❀-:-❀-:-❀:—

एक दिन राजा परीक्षित गद्दी पर बैठे थे ता समय श्री व्यासजी के पुत्र श्री शुकदेवजी आये राजा देखतेही सिंहासनसे उतर खड़ा हुआ और ऋषिके चरणारविंदमें गिरकै साष्टांग दण्डवत् की फिर बड़े आदर और सत्कार सहित उनको सुन्दर स्थान में लेजाकर रत्नजटित सिंहासन पर बैठाये दोऊ चरण कमलनको धोकर चरणोदक लिया और विधि पूर्वक पूजन करके नाना प्रकार की सामग्री भोजन कराई और घंटा नादसहित आरती उतारी तबतो राजाके मनकी लगन देख श्री शुकदेवजी प्रसन्न भये ता समय राजाने दोऊकर जोड़ के विनती कीनी कि हे कृपासिन्धु दीनदयालु आपकी कृपासे सदैव वेद और पुराण के सुनने से मेरे

हृदय में चांदना होताहै और मनको आनन्द प्राप्त होताहै परन्तु अब मेरे मनमें सन्देह प्राप्त हुआ है कि संसार में ऊंच और नीच दोऊ कर्म हैं सो आप कृपा करके इन दोनों कर्मन के भेद भिन्न २ मोसों कहौ और मेरे मनका संदेह निवारण करो राजाका यहप्रश्न सुनकर श्रीशुकदेवजी वहुतप्रसन्नभये और आज्ञादी किहे राजन तेरे प्रश्नोंमें संसारी मनुष्यों को बड़ा लाभहै औरजो यह संदेह तेरे मनमें उपजा है सोई अर्जुनके मनमें उत्पन्न हुआथा सो श्रीकृष्ण जीने वाके प्रश्नका उत्तर दियाहै सोई मैं तेरे आगे कहता हूं मन देकर सुन ॥

श्रीशुकदेवजी परीक्षितसे कहतेहैं किहे राजन् एकदिन प्रातकाल श्री कृष्णजी अर्जुनके घरपधारे खबरपाई कि अर्जुन सोवै है यह बात सुन के श्री कृष्णजी अचम्भे में रहे फिर अर्जुनने महाराज श्री कृष्णजीको स्वप्नमें देखा और तुरन्त जागउठा तब सेवकने अर्जुनसे कहा किहे स्वामी श्री कृष्ण जी पधारेहैं यह सुन अर्जुन दौड़कर श्री कृष्ण जीके चरणारविंदमें गिरा और दण्डवत् करके दोऊ

कर जोड़कर बिनतीकी कि हे सच्चिदानन्द जगदीश मोसे यह अपराध अनजाने बनपड़ा है सो आप क्षमाकरो और मेरी रक्षाकरो यह सुनके श्रीकृष्णजी ने अर्जुन से कहा अर्जुन तू बड़ा बुद्धिमान है और ज्ञानी है या समय तोको मैंने स्वप्न अवस्था में देखके बहुत सोच कियो क्योंकी मनुष्य देह बहुत कठिनता से प्राप्त होतीहै सो या देह को पाय के ऐसे समय में सोचना बुद्धिमानको योग्य नहीं है ये वचन श्री कृष्णके सुन अर्जुन ने फिर बिनती कर प्रश्न किया हे दीनदयालु दीनबन्धु जो अपराध सेवक से अनजाने बन आया है वाको कृपा दृष्टिसे क्षमाकरके अब आप आज्ञा करिये आज्ञा करो कि कौन२ से आत्महितकारी कर्म हैं सो त्यागना करना अवश्य है तब श्रीकृष्णने उत्तर दिया कि हे मित्र जो बातें वेदमें गुप्त हैं और देवताओंने जानी नहीं है सो तेरे आगे कहता हूं मन लगाय के सुन और इन बातोंको तू वा और कोई सुनके वा पढ़के अंगीकार करेगा सो पापके बन्धन से छूटके मुक्ति को पावैगा श्रीकृष्ण कहते हैं ॥

१ पहिली शिक्षा। हे अर्जुन प्रातःकाल जिस समय श्री सूर्य उदय होय मनुष्य को सोवना योग्य नहीं है क्योंकि एक पहर रात्रि बाकी रहे पर देवतों का आगमन होताहै इस लिये मनुष्यको चाहियेकि दो चार घड़ीके सबेरे उठके परमदयालु परमेश्वरके ध्यानमें मन लगाय के भजनानंदी मग्न रहै और अरुणोदय होय जबस्नान करके श्रीसूर्यनारायणको जल अर्पण करके दण्डवत करै और पितृदेवतोंको जल देइतो जल ग्रहण करिवे सों सूर्यदेवताजीऔर पितृदेवताबलवानहोयके प्रसन्नतासोआशीर्वाददेवैं जो मनुष्य इस बिधि सों अंगीकार करेंगे सो इस लोक और परलोक का सुख भोगेंगे ॥

२ शिक्षा॥ हे अर्जुन एक चार पाईके बिछौने पर अपनी स्त्री के सिवाय किसी दूसरे के संग सोवना पापका मूल है क्योंकि बिवाहता स्त्री तो अर्द्धांगी सबपाप और पुण्यमें संगरहतीहैं परन्तु सिवाउसके और दूसरा अपने बिछौने पर सोवे तो वहभीपाप पुण्यमें साझी हो यह सुनके अर्जुन ने हाथजोड़के प्रश्न किया कि हे कृपालु करुणानिधान जो कोई

नतैती अपने घर आवै और उसकेपास बिछौनानहीं होयतो क्या करना उचितहै तब श्री कृष्णने कहा किउस नतैती को उचितहै किजो अपने समान चारपाईपर अपनावस्त्रबिछौनेपर बिछाके उसपरसोवै तोकुछ दोष नहीं होय ॥

३ शिक्षा। हे अर्जुन बिधवा स्त्रीके हाथसों रसोई पावना बड़ा दोषहै क्योंकि जिस स्त्रीका पति मर जाय वो अधजले मुर्दे के समान होजाती है इस कारण उसके हाथ से रसोई पावना महापाप है ॥

४ शिक्षा। हे अर्जुन जो कोई संध्या समय घरके आंगन में झाड़ू देताहैवह अवश्यदरिद्री होताहै क्यों कि वह समय लक्ष्मीजी गमनकरनेका घर घरमें है जिसके हाथमें झाड़ू देखें लक्ष्मीजी वाको शाप देवें गमन नहीं करैं ॥

५ शिक्षा। हे अर्जुनजो मनुष्य एकादशी और कोई ब्रत धारणकर स्त्रीके पास जावैतो ब्रतकाफल नहीपावे यह सुन अर्जुननेदोऊकर जोड़केप्रश्नकिया किहे जगदीश। ब्रतके दिन जो स्त्री त्रिदोष कारसे निश्चिन्त होके स्नानकरै और पुरुष वाकेपासजाय

नहीं न जायतो महापातकी होय और जायतो व्रत निष्फलहो याप्रकहा करनो चाहिये श्रीकृष्णजीने कहा कि अर्द्धरात्रि बीतेपर जायतो कुछदोष नहीं क्योंकि रात्रिकेदोपहर पिछले अगले दिनमेंगणितहैं।

६ शिक्षा। हेअर्जुन रात्रिके समय दीपककीबाती जलनेसे बाकी बचै तो वा मरी बातीको दूसरे दिन जलावैतो महापापहै याही पापसे मनुष्यकी स्त्री बहुत कालतक बांझ रहैगी अर्जुननेजब श्रीकृष्णके मुखारविन्दसे यह शिक्षा सुनी बहुतपश्चातापकीनो औरचकित भयो फिर दोऊकर जोरिकेविनतीकीनी किहे अनाथोंकेनाथ दयासिन्धु बासुदेव आपनेजब शिक्षाकीनी उसकेसुननेसे दासकेमनमेंअतिआनन्द प्राप्त भयोहै कृपा करके कुछ और आज्ञा कीजिये

७ शिक्षा। हेअर्जुनजो मनुष्य सूर्यकेसन्मुखहोय के दन्तधावन और कुरलाकरै तो महापातकीहोय और अन्तकाल नरकमें जायजानना चाहिये किदे तानमें यतीनोदेवता बड़ेहैं जो मनुष्य प्रीतिकीरीति से इनका पूजन सदा करता रहै तो वाको यज्ञकरे को फलप्राप्त होगया अर्जुनने प्रश्नकिया कि हेघन

श्याम चतुर्भुज स्वरूप इन तीनों देवतों का पूजन किसविधि प्रति दिन करना चाहिये सो कृपा करके आज्ञा करो श्रीकृष्णजीने कह्यो। विध पूर्वक सूर्य नारायणका इतवारको व्रत धारणकरै और व्रत न राखसकै तो वा दिन नोंन नहीं खाय और प्रात काल स्नान करिके श्रीसूर्यको तांबेके पात्रसों जल अर्पण करै दण्डवत् करै(विधि पूजन अग्नि देवता। प्रातकाल स्नान करके अपने इष्ट देवका ध्यान अरु स्मरणकर फिरशर्कराघृत तिलसव सामिग्रीसे अग्नि देवका पूजनकरै और जो या भांति नहीं करसकैतो रसोई होजाय तब रसोई की सब सामिग्री से पूजन करै[विधि पूजनजल देवता]प्रातकाल स्नान करके जल देवतापै धूप चढ़ावै और चंदन चाँवल पुष्प चढ़ाके मिठाई अर्पण करै [इतिपूजन] प्रति दिन जो मनुष्य इस भांति इन तीनों देवतान का पूजन करै तो इनके आशीर्वाद सों इसलोक में सबतरह कोसुखऔरसन्तान पावै परलोकमें वैकुण्ठधामपावै

८ शिक्षा। हे अर्जुन मनुष्यको चाहिये किजलते भये दीपककी बुझावै नहीं और जो कोईपुरुषदीपक

सो दीपक जोड़ै पातकी होय ॥

९शिक्षा। हेअर्जुन। ब्रती मनुष्य चारपाई परसोवै तोव्रतनिष्फलजायक्योंकि जिसदेवताको ब्रतधारण करै सोई देवता व्रतके दिन मनुष्यकी देहमेंबासकरैहै इस लिये जो ब्रती ब्रतके दिन स्वच्छतासे रहे और चारपाईपर सोवैनहीं पृथ्वीपर सोवैस्त्रीसे अलगरहै एकबार फलहार करैकुछ ब्राह्मण कोदेवै तो देवता प्रसन्नहोयके आशीर्वाददेवै औरव्रत फलदायकहोय॥

१० शिक्षा। हेअर्जुन ब्रतके दिन किसीकोअपनी जूटन न दैनाचाहिये क्योंकिजो कोई अपनी जूठन खायगा सोव्रतकेफलमेंभागी होगायहबड़ादोषहै ॥

११ शिक्षा। हेअर्जुनजो मनुष्य रसोई मध्य में अर्थात् कछुसामिग्री बाकी बनानी रहगई होयजल्दी करके रसोई खाने लगजाय जबलों रसोईकी सामग्री तैयार नहीं हो सके औरअग्नि देवको भोजन न करायलेकिसीको रसोईमेंसे अग्नि देय यारसोईमें थाल आदि कोई पात्र नहीं होय और रसोई की सामिग्री को पृथ्वीपरधर देवैतो उनतीनों पापनके

कारणजो इनमें सों एक २ न्यारौ २ महा पाप है वह मनुष्य सदा दरिद्री रहैगा इसलिये मनुष्यको अवश्यहै किजव रसोईमें सबसामग्री तैयारहोजाय तबस्वच्छतासों प्रथम आसनपर चौरस बैठके अग्नि मुखकेद्वारा पूर्णब्रह्म परमेदयालु परमेश्वरको भोजन करावै फिर अन्नदेवको नमस्कार करै फिर एक अभ्यागतको रसोईकी सबसामग्री भोजनकरावै और जो सामग्री नहींहोयतो थोड़ी सबसामग्री अभ्यागतके निमित्त अर्पिके आप रसोई भोजन करैतो इसमहापुण्यके प्रतापसों अग्नि महाराज और अन्न देवसे आशीर्वाद पाइके वहनर सदासुखी रहैगा ॥

१२ शिक्षा। हेअर्जुनजो मनुष्य तांबे के पात्र को जूठनसों अशुद्ध करे वा अशौच स्थानमेंलेजाय सो अन्तकाल नरकवासी होय क्योंकि सब धातुमें तांबा महापवित्रहै और इसलिये जो मनुष्य तांबेके पात्रमें जलभरके स्नानकरैगातो गंगाजलके समान माहात्म्यहै तिलअरुजल अर्पणकरैतो महापुण्यहै ॥

१३ शिक्षा। हेअर्जुनजो मनुष्यब्राह्मणी वा और परनारिनसे मैथुनकरै औरवाके बिन्दुसे कदाचित्

किसी स्त्रीको गर्भ रहै और पुत्र पैदा होयतो वा पापी मनुष्यके पितृदेव जो अपनेसे सुकर्म भोगने के कारण वैकुण्ठधाममें वासकरते होंयसो वैकुण्ठसे नरकमें वासकरें व्रत तर्पण श्राद्धमें सदा विमुखरहे यह पाप सब पापनसों भारी है ॥

१४ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य स्त्री सों संग करके और अपवित्ररहै इसपापसे अन्तकाल नरक में जाय इसलिये किउसका पृथ्वी पांव परना ऐसा है जैसा पितरन के शिरपर धरा।

१५ शिक्षा। हेअर्जुन अमावस्याको वृक्षकी डाली और पत्तोंका तोड़ना ब्रह्महत्याके समानहै और वा दिन दन्तधावन करना भी अयोग्य है ॥

१६ शिक्षा। हेअर्जुनजो कोई परदेशीया अभ्या गतकुछ याचना करै तो अपनी श्रद्धाके अनुसार वाको देवै बिमुख न जानेदे तो महापुण्यहै ॥

१७ शिक्षा। हेअर्जुनजो मनुष्य अपने घरमें टूटी खाट फूटे बर्तन राखे सो दरिद्री होय है।

१८ शिक्षा। हेअर्जुनजो मनुष्य नारायणकानाम लेके खाया पीयाकरे और चलते फिरते उठते बैठते

जो कामकरे परमेश्वर कानाम लेकेकरैतौ महासुकर्म के फलसे इस लोकके और परलोकके सुखोंका परम आनन्द पावै यह नेममहा पुनीतहै अरु जो मनुष्य चलते फिरते उगर वाट में बारम्बार मन में आवै सोले खाय और परमेश्वरका नाम उच्चारणनहींकरै तो इस पाप से बिपत के बंधनसे कभी नहीं छूटे।

१९ शिक्षा। हे अर्जुन किसी मनुष्य के संग एक पात्र में भोजन करना बड़ा दोष है न जानों जाय पुबले जन्ममें वह मनुष्य कौन सी देह में था भोजन करने के कारण वाके पूर्ब जन्म कीप्रकृति अन्तष्करण में प्राप्त होजांय इसलिये ऐसे नीच कर्म को अंगीकार करना न चाहिये।

२० शिक्षा। हे अर्जुन भोजन करनेके समयअन्न देवता मुखमें पधारे हैं इसलिये मौन धरके भोजन करनाउचित है क्यों कि बोलने बतलाने में मिथ्या वचन मुख से निकसे तो अन्नदेवके श्राप से याही जन्ममें बिपत के बन्धनमें बंधे इसलिये मनुष्य को अवश्य है कि एक चित होय चौरसबैठके दांये बाँये नदेखे और अन्नदेवकी बड़ाई करते २ भोजन

करै तो इस कर्म से सदा सुखी रहे यह सुन अ-र्जुनने प्रश्न कियाकि हेजगदीश जगतगुरू भोजन करते कुछ कहना किसी से अवश्य होय तो कैसे करना चाहिये श्री कृष्ण जी ने आज्ञा दीनी कि बोलना अवश्य होय तो मनमें अन्न देवसों प्रार्थना कर के सच्चिदानन्द भगवान का नाम लेके पांच ग्रास ले अरुआचमन कर के बोले परन्तु किसी की बुराई न करै और खोटा बचन न बोले।

२१ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य अपनी ब्याहता अर्द्धांगीपरम हितकारी स्त्रीसे विपरीत ठानके अपने मुखसे वाकी बुराईकरै अरुखोटावचन बोलकेमनको दुख रूपी आग्निमें दहे इस पापसे इस लोकमेंतोसदा क्लेश के बन्धन में रहे और परलोकमें नरकमें जायके बास करै क्योंकि जिस समय ब्याहतास्त्रीकेगर्भसेपुत्र प्रगट होता है तिस समय उसके पितृदेव कदाचित नीच कर्म के फल सों नरक वासी होंय तो पाप मोचन पुत्र की प्रसन्नता से नीच कर्मन के भोगनते मुक्तिपायके वैकुण्ठको सिधारें और बारम्बार आशी र्वाद दिया करें इसलिये मनुष्य को चाहिये कि प्रेम

प्रीति सों ब्याहताज्ञीकोराखैवहमनवचकरके अपने
पति के समान सुन्दरऔर हितकारी किसीकोनजाने
क्योंकिब्याहता पापपुण्यकी संगीहै यातेंवाके पापन
सों पाप और पुण्यसों पुण्यकी बढ़ती होती है और
कदाचित वासों कोई अपराध बन आवैतोपुरुषको
चाहियेवापै कोपदृष्टिन करै सदाप्यारसे वाकोशिक्षा
देता रहै और वाके मनको सदा प्रसन्न राखे और
शीलवन्त स्त्रीको चाहिये कि अपने पति को ईश्वरके
समान जानके निशदिन वाकी सेवामें तनमन अ-
र्पण करै पतिव्रत धर्म को सावधान राखै और
पति कैसा ही कठोर निर्दयी हो परन्तु वाको ईश्वर
के समान जाने जैसे सम्पातिमेंतैसे विपतमें प्रसन्नता
सहित पति की आज्ञा न मोड़े और दुख सुख में
जिस विधि परमेश्वर राखै रहै अपने प्यारे पीव की
प्रसन्नता का उपाय करती रहै और अपनी श्रद्धा
के अनुसार सुन्दर वस्त्र आभूषण अपने अंग को
शोभित कर के पुरुष के मन को मुदित राखै जासे
पुरुष का मन परनारिन पै न जाय और अपने
धर्म कर्म में सावधान रहै ऐसी विधि सों जो स्त्री

सन्ध्या समय देहली पर बैठेतो बाके घरसों पुण्य दान हटे सम्पत्ति घटे और ऋण बढ़े ॥

२७ शिक्षा। हे अर्जुन जो कोई प्रातः काल झाडू दे के कूड़ा पौली के आगे डाले वा अहंकारी धनवान की सम्पत्तिलक्ष्मी जाके श्रापतेथोड़ेही दिनमें जातीरहै॥

२८ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य बाग और ताल नदी के किनारे पर दिशा जाय सो बहुत काल नरक में पड़े।

२९ शिक्षा। हे अर्जुन मनुष्य ग्यारसके दिन अन्न खायब्रत न राखे उसका जीवन पशु के समान है अन्तकाल पंच हत्यानका अपराधी होयके नरकमें बास करै इसलिये मनुष्यको उचितहैकि ग्यारसका ब्रतधारणकरैदिनभरश्रीदीनदयालकेध्यानमेंरहेऔर रात्रिको जागरणकरेतोवाके पापनकोनाशहोय और पितृस्वर्गको जांययह सुनके अर्जुनने प्रश्न किया हे दयालजोभूलकेब्रतकेदिन,अन्नखायतोवहयहपापसो कैसे मुक्ति पावै श्रीकृष्णबोले भोजन करतेभीजानो जायफिर ग्रास नले तुरन्त भोजनकोत्यागदे ब्रतधारै

जो व्रतको पूर्णफल प्राप्त होयऔर कदाचित निर्जल व्रत न राखसकै तो गायके दूधके सिवायऔर कोईअहार न कीजेऐसे व्रतको फल यज्ञके समानहैऔर ग्यारस कोअन्न खायवो कोड़ेके समानहै जितने चांवलखाय उतनी हत्या शिरपै चढ़ैं औरव्रत न राख सकैतोभी ग्यारसको चांवल खाइवो दोषहै क्योंकि ग्यारसको सारे पापअन्न में बसे हैं अर्जुन यह गुप्त वार्ता सुन कम्पित होय महाशोक समुद्रमें डूब गया तबतो श्री कृष्णजीने वाको शोक अवस्थामें दुःखी जान अति दयालुतासे वाके मनको क्लेश मिटाय के आज्ञाकी कि हे अर्जुन आजलों जो तोसो नीचकर्मबनआयो तिहि कारण यह गुप्त भेद तोसों प्रगट कियो मनल गाय वाको अंगीकारकरजोतेरे कामआवैयह आज्ञा पायके अर्जुनने श्रीकृष्णजीके चरणाविंदमें शिरनवा यकै प्रसन्नता सहित दाऊकर जोरिके स्तुतिकीकिहे मधुसूदन व्रज भूषण जो आपने संसार सागर से उतारबे को यह शिक्षा नौकी रूप मुखारविंदसे आ ज्ञाकी जाकी महिमा गायवेको मेरा क्याउनमानहै जहां शेषदिनेशवेदादिक पार न पायसकैंसोहेनाथ

मेरी रक्षाकरो अर्थात् और कुछ आज्ञा कीजिये श्री कृष्णजीने अर्जुनको परम अधिकारी जानआज्ञाकी

२० शिक्षा । हे अर्जुन जो मनुष्य रजस्वला स्त्री सों मैथुन कर्म करै सो या पापनके कारण संसारमें रोग ग्रसित रहै और अन्त काल नरकमें जाय के हज़ार वर्षसों अधिक बासकरैकारण यहहैकि रजस्वला स्त्रीपहिले दिन ब्रह्महत्यारीदूसरे दिनचांडालनी तीसरे दिन धोबनके समान होती है इन तीन दिन में वाके वस्त्र छूने और मुख देखने में वाको पाप लगता है कदाचित रजस्वला स्त्री के हाथ से मनुष्य कोऊवस्तुको भोजनकरैतो अपनीअवस्था में जितने पुण्यदान किये होंय सो सब नाश को प्राप्त होयँ इसलिये मनुष्यको उचितहै किचौथे दिन शुद्धस्नान करै तब स्त्री के पास जाय और जो चतुर्थ दिन संगम स्त्री सों न करै तो एक मनुष्य मारने की हत्या होती है यह सुनके अर्जुनने विनतीकी किहे जगदीश अन्तर्यामीजोवा स्त्रीको पुरुष परदेशहोय तो वा पापसे कैसे मुक्ति पावै श्रीकृष्णजीनेकहा कि जो पुरुष घरमें नहीं होय तो स्त्री को अवश्य स्नान

करके सूर्यके सन्मुख स्थित होयके अपने पति कीमूरत मनकी आरसी में देख लेइ तो वाको पति या पाप सों मुक्ति पावै॥

२१ शिक्षा। हे अर्जुन जिस मनुष्यको जीव किसी पदार्थ कोभोजन मांगे वह जीवको बिमुख राखेतो या दोषके कारण वह मनुष्य याही जन्ममें सदा दुखी और निराश रहै फिर मृत्यु समय जीव वाही पदार्थमें जाय प्राप्त होय यहसुनके अर्जुनने प्रश्नाकिया कि हेनाथ निर्धन मनुष्य जीवकी प्रसन्नता कैसे करै श्रीकृष्णजीने कहाकिनिर्धन मनुष्यकी प्रसन्नता के लिये रविबारको जन्म नक्षत्रमें वा अमावस्याके दिन श्रद्धाके अनुसार मनमाने पदार्थके भोजन करे तो परमेश्वर वाकी कामना पूरण करै॥

२२ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य किसी को कोई वस्तुपुण्य अथवा और भांति देनीकरदेवै फिरभूलके या अहंकारके कारण नहीं देयतो महापापहै अगले जन्ममें देगाअरु वहमनुष्य वासे परलोकमें लेगाइस लिये मनुष्यको उचितहै कि जो मुखसेकहै पूराकरै।

२३ शिक्षा। हेअर्जुन जो मनुष्य कुछ लेके बेटी

का व्याह करै तो इस पापके फलसे सदा दरिद्री रहै और वाके पितृदेव तर्पणसे विमुखहो नरकमेंजाय॥

३४ शिक्षा । हे अर्जुन कोई मनुष्य किसी सों कुछ मांगे और वह देवे तो या पुण्यको फल अश्वमेध यज्ञ समान है क्यों कि जीव की प्रसन्नता से परमेश्वर की भी प्रसन्नता का कारण है॥

३५ शिक्षा । हे अर्जुन मनुष्य को चाहिये कि किसी सों कुछ मांगे नहीं परम दयालु परमेश्वर ने जो दिया है उसी में सन्तोष राखै॥

३६ शिक्षा । हे अर्जुन जो मनुष्य कामनाके अर्थ चारपाई या चौकी पै बैठके परब्रह्म जगदीश को भजन करै तो फलदायक नहीं होय इसालिये मनुष्य को उचित है कि पवित्र स्थान में ऊन वस्त्र मृग छाला कुशासन पै स्त्री सहित बैठके पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके त्रिलोकीनाथ का भजन और ध्यान स्मरणमें मन लगावे तो फलदायक होय॥

३७शिक्षा । हे अर्जुन जो मनुष्य श्री गंगाजीवा और कोई तीर्थ स्नान या दर्शन को जाके पर स्त्रीपै कुदृष्टि करैतौ या पापसों कभी नहीं छूटैऔर

अन्त काल यमके दूतवा पापीको नरकमें लेजायके ताती सींक वाकी देह पै लगाके अनेक प्रकारसों वाको सन्ताप देवें यह सुनके अर्जुनने श्रीकृष्णजी की अस्तुती करके बिनती की हे बासुदेव मधुसूदन जगतगुरु कृपा करके कुछ और आज्ञा कीजिये तासों तम अज्ञान दूर होय अरु दीपकरूपी ज्ञानसों हृदय के महल में चांदना होय ॥

३८ शिक्षा । हे अर्जुन जो मनुष्य श्री गंगाजी के स्नान को पनही पहरे जाय तो गंगा स्नान को महात्म्य नहीं पावे ॥

३९ शिक्षा । हे अर्जुन जो मनुष्य चारमनुष्यों में बैठके कुछ सामग्री मगाइके अकेला भोजन करै तो या पापसों मुक्ति नहीं पावे दोष है ॥

४० शिक्षा । हे अर्जुन जो मनुष्य इतवार द्वादशी अमावस्या को ब्रतनराखै और खिचड़ी खाय सो या पापके कारण और पदार्थनसों विमुख रहे वाके सन्तान न हो ॥

४१ शिक्षा । हे अर्जुन द्वादशीको पुराणको श्रवण और पाठ अयोग्यहै क्योंकि वा दिन व्यासजी

दिनभर परमेश्वरके पूजन ध्यानमें मनको स्थिरकर बैठते हैं कदाचित कोई पुराण बांचे तो उनको उन ध्यानावस्थामें पुराणकी ओर चलायमान होताहै ॥

४२ शिक्षा । हेअर्जुन व्रतके दिनवा आदितवार को दर्पण में मुख देखना अयोग्य है तिलक लगाने के समय देखे क्योंकि तिलक नारायणकारूपहै ॥

४३ शिक्षा । हे अर्जुन जिस चारपाई पर मनुष्य ब्याहता स्त्रीके संग सोवै वाको याई बैठे वा और किसी को देवै तो बड़ा दोष है ॥

४४ शिक्षा । हे अर्जुन जोमनुष्य किसी से तिल लेके भोजन करेतो बड़ा दोषहै यह सुनके अर्जुनने प्रश्नकियाकि हे दयालु ! कदाचितकोई हि : बासे तिल खवावै तो किस रीतिसे वा दोषसे निवृत होय श्रीकृष्णजीने कहा कि प्रथम तो भोजन हो न करै और करै तो वाके बदले वाको खवाय दे नहीं तो ब्राह्मणको देवे क्योंकि तिलदानका बड़ा फल है ।

४५ शिक्षा । हेअर्जुन जो नर लिंगी कर हाथ न लेइ अपवित्र रहै तो उसका सुकर्म जाय ॥

४६ शिक्षा हे अर्जुन जो मनुष्य मनको रोकके

एक चित्त होके प्रीतिभावसों कथा श्रवण करते हैं सो वैकुण्ठमें नाना प्रकारके सुख पावेंगे ॥

४७ शिक्षा। हेअर्जुन जो कोई किसीकी अमानत धरीहुईको अपने कब्जेमें कर मुकर जाय सो अन्त काल नरकमें जाय दुःख भोगे और बाकी भी बांझ हो ॥

४८ शिक्षा। हे अर्जुन जोमनुष्य अपनीब्याहता स्त्रीको त्यागे और विजारके लोगोंसे मैथुनसमयमें की भगोवेता इस पापसे नरकमें जाय और उसकी सन्तान वे औलाद रहे ॥

४९ शिक्षा। हे अर्जुन जिस समय करजदारके घर बोहरा आयके अपने रुपयेका तगादा करै और क्रोधसों सोगन्द खायके द्वारेपै बैठे उस समय कर्जदार जो अन्नजल खायतो इस पापसे महादोष होय जन्मभर दरिद्री होय ॥

५० शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य अपने कुटुम्ब की वा नातेदारोंकी बुराई करे तो इसपापके कारण उनका मुँह नहीं देखे ॥

५१ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य अपने मुँह से

अपनी अस्तुति करै औरोंसे अपनी अस्तुति सुनके प्रसन्न हो तो अन्तकाल नरकमें जाय ॥

५२ शिक्षा। हे अर्जुन जो बागके वृक्षनको काटै वा ताल पोखरको माटी से पाटै और विद्या पै ध्यान न देवै इस पापसौं नरकमें जाय मुक्ति न पावै

५३ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य बैल या घोड़को वधिया करै तौ धन सन्तानको सुख न देखै और अगले जन्ममें हीजड़ा होय और बड़ोंके सुकृतसे आप हीजड़ा न होय तो उसके पुत्र नपुंसक होंय दरिद्री होंय इसके समान और कोई पाप नहींहै॥

५४ शिक्षा। हेअर्जुन जो मनुष्य रुपयेके बदले धरतीको अपने कब्जेमें लावै सो इस पापके कारण अन्धा होय और सन्तानका सुख न पावै पुत्र जवान होकर मरजाय ॥

५५ शिक्षा। हे अर्जुन पिता और बड़े भाई और जो उमरमें आपसे बड़ा होय उनके खोटा वचन बोलना महापाप है ॥

५६ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य चरती गायको जंगलमें भगावै तोमुक्ति नहींपावै और निपुत्रीरहै

५७ शिक्षा । हे अर्जुन जो मनुष्य अपने स्वामी वा पिताके संगयुद्धमें जाय और कायरतासोंउनको छोड़ भागे तो इस पापसे वाको सब शरीर हाथ पकड़ के गलजाय ॥

५८ शिक्षा । हे अर्जुन जिस मनुष्य ने अपनी अवस्थाभरमें गंगाजी वा और तीर्थमें स्नान नहीं किया नादारीवा न तदारीकी लज्जासेवाकोजानौ संसारमें ढोरके समानहै इसलिये मनुष्यको अवश्य है जो स्त्री सहित तीर्थ स्नान करके कुछ श्रद्धा होय सो पुण्य करै तो अश्वमेधका फल पावै और वाके कुलवासदा सुखी रहैं यहसुन अर्जुन ने प्रश्न किया हे जगदीश जिसको नातदारोंकी लज्जा वानादारी सों तीर्थ स्नान स्त्री सहित नम.स भयौ उसको कहा कर्त्तव्य है श्रीकृष्णजी बोले जब पूर्णमासी या संक्रांति या पुण्य व्यतीपात सिद्ध योग अमावस्या जन्म नक्षत्रादि शुभवार आवैं तब स्त्री सहित किसी नदी या तालाब पै कुए हौद या घर में स्नान करके श्रद्धासों पुण्य करता यज्ञके समान फलदायक हो पिछले पापनसों मुक्ति पाय के बैकुण्ठबास पावै । हे

अर्जुन जो वार्ता गुप्त है चार वेदन में और देवन में जो तू इस फलका गाहकहै तासों तेरे आगे कही।

५९ शिक्षा। हे अर्जुन मनुष्य को चाहिये कि किसी का पर्दा न उघारै इसकार्यमें महा दोष है।

६० शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य व्याई हुई गऊ का दूध बछड़ा को न्यारा करके दुहै और चुखावे नहीं तो इस दोष ते बहुत काल निपुत्री रहै॥

६१ शिक्षा। हे अर्जुन अपने कबीले को घायल करै वा जीव का मारना या उसकी बुराई करना बड़ा पाप है॥

६२ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य किसीके हिस्से पर कब्जाकरै तौ अवश्य उसका स्त्री बांझहोय कुकर्मी होय जन्म भर दरिद्री निपुत्री रहै और जो पुत्र भी हो तौ अन्धा होय सदा दुःखित रहै॥

६३ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य चन्द्र सूर्य ग्रहण में अन्न जल करै वा मूत्र करै वा पानी भरतौ महा दोष है चन्द्रमा और सूर्यके शापते धन सन्तान को सुख नहीं पावै और नरक में जाय॥

६४ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य दिशा जायके बचे हुये जलसे हाथ पांव धोवे तो महादोषहै उसके छुनवेके मनुष्य को प्रेत दुखी करै क्यों कि वहजल प्रेतके भागका है भूल के ऐसा न करना चाहिये॥

६५ शिक्षा। हे अर्जुन जिस मनुष्य के सन्तान नहीं उसका जीवना संसार में तुच्छ है यह सुनकर अर्जुनने प्रश्न किया कि हेस्वामी पुत्रहीन मनुष्यको किसके हाथ का तर्पण पहुँचे श्रीकृष्णजी इसबातपर हँसे और कहा कि हे अर्जुन ये गुप्त वार्ता जो तेरे आगे कहताहूं देवता भी नहीं जानते इनपर अमल करनायज्ञके तुल्य फलदायक है जो निपुत्री मनुष्य की स्त्री सुखीन होय और प्रीत भावसों मनकोशुद्ध करके तर्पण और श्राद्ध करैतो वाके पतिको पहुँचे और पुनीत स्त्रीके सुकर्मन सों वाके ७ कुलस्वर्गमें जांय और कदाचित अपने पापन के वश नरक में होतौ मुक्ति पावै॥

६६ शिक्षा। हेअर्जुन द्वादशी अमावस्यारविवार को शरीर में तेल मलने का महादोष है॥

६७ शिक्षा। हे अर्जुन गृहस्थी के घरमें पीपल

आदि वृक्षको राखना नहीं चाहिये क्योंकि प्रतिदिन एक बार पितृ देवता अपने पुत्र के घर में आवते हैं जो वहां ब्राह्मणोंको मिठाई खाते देखें तो प्रसन्न हो आशीर्वाद देंइ और वृक्ष में परी देव भूत प्रेतादिक को वास देख कर उनसों डर के घर में आवें नहीं शाप देजाँयतो वह मनुष्य निर्धन होकर सदा दुखी रहे इस लिये घर में वृक्ष को राखना अण्डी के तेल का दीपक पीपल के नीचे बालना अशुभ है।

६८ शिक्षा-हे अर्जुन मनुष्य देह बड़ी कठनाई वा बड़े जप तप के फल से प्राप्त होती है यह देह पायके अहंकारकी फाँसी गलेमें मेलना अयोग्यहै देखो सदा शिर के वाल तो मौत के हाथ में रहते हैं और न जानिये किस समय शरीरसों जीवन्यारा होजाय तिसपरमनुष्य कहेंकि अभी लडकाईजवानी है बुढापेमें स्मरण भजन कियाजावेगा वहबड़ीभूल है जो क्षण भंग देह में झूँठा भरोसा करै मनुष्य को उचित है जो क्रोध लोभका त्याग कर अहंकार और बुराई सों अलग रहे ईश्वरने जो दियाहै उसमेंसंतोष

राखे हर्षमें हानिलाभ भले बुरेको समान जानकेसर्व जीवनमें पूरणब्रह्मपरमेश्वर को एकसा देखे औरसदा सच्चिदानन्द नारायणके ध्यान स्मरणमें मन लगावै महा प्रसन्न रहे क्योंकि अन्तकाल मातापिता भाई सहाय नहीं करें सुकर्म किये सहाय होते हैं ।

६९ शिक्षा—हे अर्जुन जिस मनुष्य के पीपलको प्रति दिन जल नहीं चढ़ाया और महादेवकाव्रतपूजन नहीं किया उसका शरीर ढोरके समानहै सदा निर्धन और दुखी रहै यह सुन अर्जुननेप्रश्न किया हे वासुदेव किसीको नित्य पूजन नहींप्राप्त होयतो कहा करै श्रीकृष्णने कहा शनिवारको वृक्षराजपीपलको जड़में विष्णु त्वचामें ब्रह्मा शाखा मेंमहादेव पात पात में देवतोंका वास होताहै और सारेदेवता सब तीर्थन सहित पीपलका पूजन करते हैं इसलिये जो मनुष्य हरशनिश्चरको नियम करके पीपल को पूजन और परिक्रमा करता रहै और कभी २ पीपल के नीचे ब्राह्मणको भोजन करावै आप भोजन करै इस पुण्य के देवता से आशीर्बाद पायके धन सन्तानका सुखपावै मनोरथपूर्ण होय कदाचित् पुरुष

व्रत न राख सकै तौ उसकी स्त्री इसी रीतिसों व्रत राखै और महादेवको पूजन प्रीति सहित करै तौ इतने पुण्य हों जो लिखने में न आवें यह वार्ता सुनके अति प्रसन्नता सों हाथ जोड़ अर्जुन बोला कि हे महाराज इसके सुनने से बड़ा आनन्द होता है कृपा करि और आज्ञा कीजै श्रीकृष्णजीने कहा कि हे अर्जुन यह पुनीत वार्ता वेदों की तेरे आगे कही और अब कहता हूं चित्त लगाके सुन।

७० शिक्षा-हे अर्जुन जो मनुष्य स्नान करके गूलर और महुवा के वृक्ष तले जाय तो चौथा फल वृक्षको मिलै यह सुनके अर्जुनने कारण पूछो श्रीकृष्णजीने कह्योकि नृसिंह अवतारमें हिरण्यकशिपु दैत्यका पेट नखोंसे फारडारा तब नृसिंहजीकेनखमें ज्वाला उठी सो वही महुवा और गूलरके वृक्षही दृष्टि परें दोऊ पंजा वृक्षनके लगाये नखन की ज्वाला मिटगई ताही समय नृसिंहजीने कृपादृष्टिसों उनको आज्ञा की जो स्नान करके नीचे आवैवाको स्नानको चौथाई फल वृक्षन को मिलै अर्जुनने प्रश्न किया कि हे स्वामी जो मनुष्य भूलके चलाजायतो

कैसवाको फलहवै श्रीकृष्णजीने कहा कि तीनवार नृसिंहजी को नामले तो वृक्षनको फल न पहुँचे ॥

७१ शिक्षा-हे अर्जुन स्नान करके चारपाई पर बैठने से बाहर जायके और से मिलाप करने से स्नान का फल जाता रहै स्नान करके कुछ खाय के जहां चाहे जाय तो कुछ दोष नहीं ॥

७२ शिक्षा- अर्जुन आमके वृक्ष तथा बागके वृक्ष काटने को दोष दश ब्रह्महत्याके समानहै और बाग लगाने का पुण्य हजार यज्ञके समान है इस लिये उचित है कि संपूर्ण बाग लगावे जो सामर्थ्य नहीं होय तो मेवाके पांच वृक्ष तुठौर में लगावै तो जीवन सफल करे क्योंकि वृक्ष लगाने का पुण्य अश्वमेध यज्ञके समान है जब मेह वरषे उन वृक्ष के पत्तानसों जलकी बूंद पृथ्वी पै पड़े तो उसका पुण्य होताहै जैसे पतिव्रता स्त्रीको अपने पतिकी सेवासे पुण्य फलदायक है और इस अपार पुण्य की महिमा लिखने में नहीं आवै जो लगावे उस के पांच पुस्त के पुरखा बैकुण्ठ में वास करें।

७३ शिक्षा-हे अर्जुन जो मनुष्य तुलसीजी का

वृक्ष अपने घरमें राखै और प्रति दिन स्नान कर के जल सींचे चन्दन अक्षतपुष्पसों पूजन करै और रात्रिको दीपक बारे तो उसके घरमें यमके दूतनहीं आवें और लक्ष्मीका प्रकाश रहै यह अश्वमेध यज्ञ के समान फल देता है जो कदाचित नित्य नहीं बने तौ कार्तिक और अगहनमें तो प्रति दिन पूजन करै और आँवले के वृक्ष तले जायके ब्राह्मण को भोजन करावै तो नरमेध यज्ञके समान फलहो परन्तु आदित्यवारको आंवलेको न पूजना चाहिये॥

७४ शिक्षा। हे अर्जुन क्वारा मनुष्य तर्पण वा श्राद्ध करै तो उसके पितरों को नहीं पहुंचे॥

शिक्षा—हे अर्जुन जिसके घरमें बांझ स्त्री है उसको संसारमें नरक है बांझकेहाथका अन्न जल खावै तो महा दोष है इस पापसे मुक्ति नहीं पावै और उस जन्ममें उसके मुखसों दुर्गन्धि आवै यह सुनके अर्जुनने प्रश्न किया कि जो ऐसी स्त्री अपने कुटुम्बमें या नातेमें होय और कुछ खवावै तो कैसे या पाप सों मुक्ति हो श्रीकृष्णजीने कहा जो भो जन करने के समय प्रथम अनन्त शक्ति परब्रह्मका

नाम लेकर प्रार्थना करैकि अन्नमोचन अथमउचारण है फिर एक ग्रासमें ज्योतिस्वरूपका नाम लेके जलपै रखदेवे और भोजनकरै तो दोष नहीं धनसंतानको

७६ शिक्षा—हे अर्जुन कोई मनुष्य पानी का लोटा घण्टी किसी दूसरे के लिये दे अथवा वाके हाथ से लेके पिये तो दोष है इसलिये मनुष्य को उचित है कि दूसरे के हाथ से घण्टी ले पृथ्वी पै धर के आप पिये दोष नहीं लगे ॥

७७ शिक्षा—हे अर्जुन जो मनुष्य जिस पात्र में भोजन करै वाको माजै नहीं और बचीहुई जूठनको वाही पात्रमें राखे तो महादोष है अन्नके शापते वह मनुष्यसदा दरिद्री और दुखी रहे ॥

७८ शिक्षा—हे अर्जुन जो मनुष्य अपने घर और आंगनमें प्रतिदिन बुहार झाड़के सफा नहीं राखेसो इस महा दोषसों पितृदेवता के शापसों छःमहीनेमें निर्धन होय और यह बातभी जाननी चाहिये कि पिताके पापसों पुत्र भी दरिद्री होय और स्त्रीके पापन सों पति बैकुण्ठ वा नरक में जाय ॥

७९ शिक्षा—हे अर्जुन नदी और कूवोंके ताते ज

लसों घरमें स्नान करना सुफल नहीं होय यह सुन अर्जुनने प्रश्नकिया कि नदी हौद कूवां नहीं मिले तो कहाकरना उचितहै श्रीकृष्णजीनेकहा तातेजल में हाथन डारैतो गंगाजलके समानहै और हाथडारै तो मदके समानहैहेअर्जुनइनबातोंमेंध्यानधरनाबड़ा कठिनहै परन्तु जोकोई भगवानके भक्तबुद्धिमान हैं सोईमनको शुद्धकरके ध्यानधरताहै यहसुनकेअर्जुन ने बड़ा शोचाकिया और श्रीकृष्णके चरणारविंदमें विनतीकी हे सच्चिदानन्द वासुदेव इनबातोंमें कुछ एकतो अमलमें आईहैंकुछनहींआईं सोकैसेकर अन्त समय मुक्ति पावैगा श्रीकृष्णजीने अर्जुन को शोच समुद्रमें डूबा देख अति दयालुता सों धिरासा देके आज्ञा की कि तू शोचमतकर धीर्य्य धरके ध्यानकर इन बातनसों पाप निश्चयही कटता है ॥

८० शिक्षा हे अर्जुन जो मनुष्य स्नान करके तिलक नहीं लगाते उनको न्हायवो पशुकेसमानहै कदाचित ब्राह्मणखौड़ तिलककरैतो उसकोदण्डवत् करना अयोग्यहै सो उसके माथेपै ऐसा तिलक देख

जो बड़ा दोषहै और सदा तिनवारे को देखके सबके फूल जरते हैं और छूटते हैं ॥

८१ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य अपने मनको संकल्प विकल्प करके निशादिन संकल्प शोकसमुद्र में डूब्यौ राखे सो सुखको स्वप्नमें भी न देखे इस लिये मनुष्यको उचित है होतव्य पे दृढ करके सुख दुख को समान जानै और ईश्वर स्मरण भजन में सदा मनको प्रसन्नता से राखे ॥

८२ शिक्षा। हे अर्जुन मनुष्य की देह बहुत कठिनाईसे प्राप्त होती है कदाचित दहीका भोजन प्रति दिन प्राप्तनहीं होयतो पूर्णमासीको अवश्य भोजन करना चाहिये याको महापुण्य है ॥

८३ शिक्षा। हेअर्जुन जो मनुष्य मसूर बैंगन लहसन खाताहै वाको नरकमें ठौरनहीं मिले क्योंकि इनके बीज पेटमें २१ दिनलों रहतेहैं दिन २१ मेंजो मृत्यु होजाय तो नरकमें वास पावेयह सुनके अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे त्रिलोकीनाथ किसीने इनमें से एक वस्तु खाईहो तो पीछे मृत्यु आय पहुँचीतो कैसे

यह पाप जाय श्रीकृष्णजीने कहा गंगाजल पीवैतो वह दोष वस्तु पेटसे निकसजाय दोष निवृत होय॥

८४ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य अपनेघरमेंएक दीपक आठों पहर जलाय राखै किसी समय बढनेन दे तो वाकेपितृदेव अतिप्रसन्नतासों आशीर्वाद देय और अगले जन्ममें भगवान की कृपासों धन सन्तानको सुखपावै अन्त समय वैकुण्ठ धाम पावै॥

८५ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य भोजन करके बची भई झूठन को दूसरीवार खाय अथवा औरको खवावै तो या महापापसों अवश्य दरिद्री होय॥

८६ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य रात्रिको अंधेरे में भोजनकरे अथवा भोजन करतेमें दीपक बढजाय और भोजन कियेजाय तो इस दोषके कारणधनसंतानको सुख नहीं देखे क्योंकि ऐसे समयका भोजन मृतके संग भोजन करने के समान है॥

८७ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य अपने शिरकी बँधीहुई पाग किसीको बखशैतो बड़ा दोषहै क्योंकि उसकी बुद्धिघटके लेने वाले की बुद्धि बढती है॥

८८ शिक्षा। हे अर्जुन दक्षिणकी ओर पांव कर के सोवना बड़ा अशुभ है ॥

८९ शिक्षा। हे अर्जुन लड़की चार वर्षलौंपार्वती है ६ वर्षलौं देवकन्या है ९ वर्षलौं कन्या कहावैहैइन अवस्थाओंमें लड़की का बिवाहकरैतो यज्ञके समान है और जो १२ बर्ष से अवस्था बीतेपर विवाहकरै तो महा दोष है ॥

९० शिक्षा। हेअर्जुन जो मनुष्य शिरपर अँगोछा बांधेऔर अकच्छ रहैतो उसके सगरे पुण्यनाशहोंय औरपापकी फांसमें फँसे। अंत काल नरक में जाय वाकेपितृदेवतानरकवासीहोंयक्योंकिवाकोंपर धरनो ऐसोहै कि जैसेगऊको पृथ्वीपेडा रउसपपांव धरना।

९१ शिक्षा। हे अर्जुन बासीजलसौं तर्पणकरनो लोहूके समानहै यापापके कारण नरकमें जायकेराध लोहूके भरेहुए कुण्डमें वास करै ॥

९२ शिक्षा। हे अर्जुन हाथ पांव गरेमें सोनेको राखना पुनीतहैक्योंकि स्नानकरनेके समय जोजल सोनेसे लगके शरीर पर पड़ेतो गंगाजलकेसमानहै

९३ शिक्षा । हे अर्जुन गंगा आदि तीरपै न्हाये पहिले धोती का धोवना महादोष है ॥

९४ शिक्षा । हे अर्जुन जो कुटुम्ब में से कोई मनुष्य तीर्थपर जाय वाको चाहिये प्रथम स्नानकरै फिर तर्पण का फल प्राप्त होय ॥

९५ शिक्षा । हे अर्जुनजो बीमार गंगाजीयाऔर तीर्थपर मृत्यु पावै वाको अधजला कर के क्षेत्र में बहावैतोमहादोषहै,औरअन्तमें नरकवासीहोय और वाकी भस्म करके ७ दिन भस्म की चौकसी करै गऊके सिवाय कुत्ता बिल्ली गधा आदि चौपायेऔर स्त्री की परछाहीं भस्मी पर पड़े नहीं फिर आठवें दिन स्नानकरकेभस्मीको क्षेत्रमेंपधरावे और क्षेत्रको मृतिकासोंशुद्धिकरैतोजगतकेसबतीर्थनके स्नानऔर बड़े बड़े यज्ञको फल पावै औरमृतक वैकुण्ठ धाम जाय दाहक को आशीर्बाद देता रहै ॥

९६ शिक्षा । हे अर्जुन मेहवर्षतेमें सूर्य उदयहोय तो वा समय का स्नान गंगा स्नानके समानहै जो देवता को भी प्राप्त नहीं होता है ॥

९७ शिक्षा। हे अर्जुन सूर्यास्तपै भोजन करनो जल पीवलो महादोषहै क्योंकि वा समय सूर्य जी और दैत्योंमें युद्ध होताहै इसलिये मनुष्यको चाहिये कि सन्ध्या समय त्रिलोकीनाथ के ध्यान स्मरणके सिवाय और कोईकाम न करै और सूर्यकोजलार्पण न करैतौ बहुत बर्ष निर्धन और दुखीरहै और यह भी ज्ञान करना चाहिये कि सन्ध्या समयचार घड़ीदिनसों वा चारघड़ी दिन चढ़ेलों प्रातः काल सोवना महाअशुभहै जोइन दोनों समय परमेश्वरके ध्यान स्मरणमें मन लगाये रहै और दुर्गा को पाठ करै तो समस्त पापसों मुक्ति पायके अपने स्थानमें बास पावै शुभ सन्तान हो।

९८ शिक्षा। हेअर्जुन जो मनुष्य हाथ पै धरके रोटी खायतो थोड़ेही कालमें दरिद्री होजाय॥

९९ शिक्षा। हे अर्जुनजो मनुष्य औरके धनसन्तानकोदेख खुनसाय इसलोकमेंनिर्द्धनहो परलोक में नरकबास पावै और अगलेजन्ममें निपुत्रीहोय

१०० शिक्षा। हे अर्जुन जो नरके सुत न होसो

या संसार म सुख न पावै और अन्तमें नरकवासी हो दूजे जन्म निपुत्री रहे ॥

१०१ शिक्षा-हे अर्जुन जिस स्त्रीके बालक पैदा होय उसके हाथका ४५ दिनतक अन्नजल खायतो दोषहै पितृ अधोगतिकोजाय यहसुन अर्जुननेप्रश्न किया कि हे दीनदयाल जो मनुष्य निर्बल और अकेला होय तो किस प्रकार या दोषते बचै श्री कृष्ण बोले कि १३दिनवा २२ दिन पीछे जबाश्री गंगाजल सों स्नान करके जो सामर्थ्य हो सो पुण्य दान करै तो दोषनहीं यह शिक्षा सुनके अर्जुन बोल्यो हे कृपासिंधु ये वार्ता सुनके चित्तमें दीपक के समान उजियारो भयो और कृपा करके कुछ आज्ञा कीजिये।

१०२ शिक्षा-हे अर्जुन मनुष्य चित्तकी प्रसन्नता सों कुछ दान पुण्य करै तो अधिक फल पावै और जो क्रोध करै तो अथवा दान लेनेवालेको दुःखकरै तो पुण्य निष्फल जाय और पातकी होय।

१०३ शिक्षा-हेअर्जुन जो मनुष्य अपने बेटे को

किसीकी गोद देवै तौ उस बेटेके हाथका जल उसको नहींपहुँचेऔरकदाचित दियेबेटेकोफिरलेवैतोवहपुत्र जवानहोके मरजाय उसके बदले दूसरा पुत्रमरे और अगले जन्ममेंधनसन्तानकासुखनहीं पावै औरनरक वासी होय यह सुनके अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे जगदीश जो कोई अज्ञानी नर दिये पुत्रको फेरलेवै तौ इस पापसे कैसे मुक्ति पावै श्रीकृष्ण ने कहा कि वह मनुष्य अपनी स्त्री और बेटे सहित श्रीगंगाजी में स्नान करसे पीली लाल धूमरी रंगकी गौ दूध की ब्राह्मण को पुण्य कर परमेश्वर को दण्डवत् करके अपराध क्षमा करावै तौ उस पापसे मुक्तिपावै पुत्रके हाथका दिया पहुँचे ।

१०४ शिक्षा—हेअर्जुन जो दो मनुष्य जिससमय युद्ध करते २ एक मनुष्य असमर्थ होय के दूसरेकी शरण आवै उस समय कदाचित वह मनुष्य शरणागतको जीवसों मारे अथवा घायल करै तो इस पाप से उसके पुत्र जवान होयकेमरें निर्धनहो उसकी स्त्री अगले जन्म में बांझ हो ।

१०५ शिक्षा हे अर्जुन जो मनुष्य कागज वा लकड़ी पै मनुष्य आदि का चित्र बनावै तो इस पापसे इस लोक या परलोक में धनसन्तानका सुख नहीं देखे और आँखों से अन्धा होय ॥

१०६ शिक्षा हे अर्जुन जो मनुष्य के वचन उच्चारण में थूक बाहर आवै दूसरे पर पड़े तो अगले जन्म शूकर की देह पावै और नरक में जाय ॥

१०७ शिक्षा । हे अर्जुन जो मनुष्य अपने स्वामी की आज्ञा को सुनके ध्यान नहीं धरै सो महा दुःखी नरक में जाय क्योंकि स्वामी की अवज्ञा करना महापाप है यह सुनके अर्जुन ने प्रश्न किया हे यदुनाथ कदाचित स्वामी ऐसी चाकरी फरमावै जो सेवक से नहीं बन पड़े तो कैसे पाप सों मुक्ति पावै श्रीकृष्णजी ने कहा कि जो ऐसी कठिन चाकरी सेवक से न बन पड़े तो जिस दिन तलक से स्वामी की आज्ञा टारी वा दिन से जबलों स्वामी दूसरी बार किसी काम की आज्ञा करे और सेवक उस काम को मन लगाय कैर उतने दिन की तलब स्वामी सों नहीं लेइ तो ये दोष दूर होय कदाचित उतने

दिलकी तलब लेइ तो धनको सुखनहीं पावै और अन्तकाल यमकेदूत वाको बड़ा दुःखदेके उस तलब को उलटा फेरलें यहसुन अर्जुनने पूछा किहे जग दीश सेवकसों स्वामीही चाकरी में चूक पड़े कदा चितवह कबीलादार और निर्द्धनहोयतो वाकोतलब फेर देनेको सामर्थ्य न होय तो कैसे या दोषतेंमुक्ति पावै श्रीकृष्णजीनेकहा किइसतलबमेंसे चौथाई पुण्य करके परमदयालु परमेश्वरसे अपना अपराधक्षमा करावै तोया दोषते मुक्ति पावैऔर सदा सुखीरहै॥

१०८ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य हवेली तालाब कुआआदि कोई मकानबनावै और अधबने मकान कीभीति या धरतीपै बैठके भोजन करैतो महादोष है इसलिये मनुष्य को उचितहै जब सम्पूर्ण मकान बनचुके तब स्त्रीसहित वाको प्रतिष्ठा करके परिक्रमा करै और ब्राह्मणन को भोजन कराके गोदान करै फिर कुटुम्ब सहित आप भोजन करै इसरीतिसे करै तो अश्वमेधके समानफलहो और परम सुखपावै॥

१०९ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य तीरथ यात्रामें

महमानी खायबासों बीसगुनी ब्राह्मणको खवावैतो दोष जाय यात्रा सुफल होय ॥

११०,१११ शिक्षा। हेअर्जुन जो मनुष्यपक्षियों के घोंसलों में से छोटे २ बच्चोंको बाहर निकालेतो या जन्ममें दरिद्री होय और वाके पुत्र जवानहोयके मरें और अन्तकाल नरकमेंजाय फिर अगले जन्ममें धन सन्तानको सुखन पावे क्योंकि छूएते पक्षीफिर पालै नहीं हेत उटजाय भूखे प्यासे होके मरजांय इसलिये यह अपराध उस मनुष्य के शिर चढ़ा ॥

११२ शिक्षा। हे अर्जुन जो मनुष्य गौको दुहती समय बाल टूटे तो दोष है याते बिन छानें दूध तातौ करै या पीवें तो दरिद्री होय क्यों कि या पापकेसमान और कोई पाप नहीं इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि दूधको छानके तातो करके पीवे।

११३ शिक्षा। हे अर्जुन जो स्त्री या पुरुष रोते हुये बालक को मारै तो नरक में जाय और सब पदार्थ से विमुख होयके निपुत्री रहे और कदाचित् पुत्रहोयतो मरजाय इस पाप से उसके पित

देव वैकुण्ठ से नरक में जाँय।

११४ शिक्षा। हेअर्जुन जो आदमीमुँह धोयेबिन पान या दूध आदि कुछ खाय और स्वामी कीवस्तु को मोल दिये बिन लेखाय तो इस जन्ममें दुःखीहो

११५ शिक्षा। हेअर्जुन रूखका कच्चा फल तोड़ना दोषहै फल पकजाय जब तोडै तो दोष नहीं

११६ शिक्षा। हेअर्जुन जो मनुष्य चाकर की तलब और नेगिनका नेग नहीं देयतो इस लोक में भलाई नहीं पावै और इस पापसों जन्म भर दुखी और निपुत्री रहे अन्त काल नरक में जाय कदाचित वाके पितृ स्वर्गबासी होंय तो नरकमें बसैं॥

११७शिक्षा।हे अर्जुन जोआदमी दानकीवस्तुको पात्र में मेलकै और पात्रको हाथमें धरके संकल्पकरै और ब्राह्मण स्वस्ति बोल देवे तो हाथ और पात्र संकल्पमें आजाय इसलियेवह पात्रभी देदेनाचाहिये और हाथ सोंजबलों सुवर्ण या चांदी या तांवा को हाथ बनवाके ब्राह्मण को नहीं दे तबलौं जो खाना

पानी या सुकर्म हाथसे करैसो फलदायक नहींहोय अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे यदुनाथ जिसको हाथ और पात्र देनेकी सामर्थ न होय तो किस प्रकार इस पापसे मुक्ति पावै श्रीकृष्णजीने कहा कि मनुष्य को चाहिये जो कुपढ़ और मूर्ख ब्राह्मण को श्रद्धा होतो दूरही से देदे और पुण्य दान का संकल्प करै तोबुद्धमान् को करै तो दोष न हो ॥

११८ शिक्षा दो०—जिस नर की नारी मरे, करे दूसरा ब्याह। ना देखे संसारमें, सुख सम्पति सुत आह॥यह सुन अर्जुनने कह्यो हे घनश्याम सुजान। याको कारण कौनहै कहिये सुखकी खान ॥ कह्यो कृष्णने हेहितू ध्यान धरो मन माँहि। ब्याह करै सुतहीन नर तो कछुदूषित नाहिं ॥ पै जिस नरके पुत्रहो बहुरि करै वह ब्याह। पावै दुख संसार में बूढ़ै समुद्र अथाह ॥ चौ०—जबदूजी घर नारीआवै प्रथम नारिके पुत्र नभावै। जो माता सम करै न प्रीती। रहै निपुत्री जगमें भीती ॥ बहुरि नरक में जाकर परै बहुत प्रकार परम दुख परै ॥ दो०—फिर

नारी अरु नर दोऊ पावें शूकर देह। भंगी कीं धरि देह को करें खेह सों नेह ॥

११९ शिक्षा। दो०—हेअर्जुनजोज्वारीजुआकरै करै खेलसों प्रीति। धनको सुखपावै नहीं,जगमेंहरत प्रतीति अन्त नरकमें जायके, पावै कष्ट अनेक। भाट देह फिर पायके, बोले झूठ प्रत्येक॥ सातवार घर भाटके,वह नरले अवतार। बहुरि नरकमें जाय के पावै दुःख अपार॥तासों हेअर्जुन हितू जूवाका व्यवहार। भूल चूककीजै नहीं,यह सुन बारंबार॥

१२० शिक्षा। चौ०—भाट भाँड़ और कलारा इन तीनों कोदेवै दारा॥ भांड लेइ करके झकझोरी॥ औरनके ठेलनको हेरी॥भाट बुराई औरन गाय। करै भलाई दाता पाय॥ करै बुराई पास कलार। जा बैठो जो खावे नार। लाज काज यह बुद्धि विसार। तातें यह उनमें सरदार॥ दो०—इन तीनोंमें एकको जो धनदे दातार। पावै अगले जन्ममें वाही को अवतार॥ घर घर फिर उदर भरे धन नाहिं आवैपास। अन्तकाल फिर पाइ है घोर नरकमें

चास ॥ यह सुन अर्जुनने किया बीते पै [illegible] ।
पांय पर्यो घनश्याम के रहौ नहीं कछु होश ॥
सो०—कह्योश्यामसुनितात तजहुपिछले दिनन को ।
हृदय धरो मो बात जासु कल्पना सबन की ॥

१२१ शिक्षा । हे अर्जुन दो०—दिसा जाय हाँत आइके दान करै जो कोय । फल ताको पावै नहीं नरक वासी होय ॥

१२२ शिक्षा । दो०-अर्जुन जो काटै नहीं [illegible] दिन नख बास । सप्तम दिन बनवावै नहीं ह[illegible] सुखशीश ॥ उनहाथनसोंशुभकरमखाना पा[illegible] । जो कारज यह नर करै सो निष्फल हो जाय ॥

१२३ शिक्षा । हे अर्जुन दो०-चौदसमावस [illegible] मिलै अरुमंगलरविवार । जो नर इनमें तेल [illegible] शीशके बार कटवावै नख आदिसों महापातकी होय । शाप देवता पायके दुखी दरिद्री होय ॥ [illegible] वारनके देवता प्यारे जान । तिनकी जो पूजा [illegible] वेगो सनमान ॥ सुत संपतिको परम सुख पावै [illegible] जगमांह । अंतकाल वैकुण्ठमें बैठे सुखकी छांह ॥

१२४ शिक्षा । दो०-जो नर रोटी आजकी [illegible]

दिनमें खाय।सदा रहे बेकार वह अंत नरकमें जाय॥ रहैं दुखी संसार में उसके पुत्र निदान । यह सुन अर्जुन ने कहा हे घनश्याम सुजान ॥ जो कुनबीनर के बचे वस्तु प्रातकी आज। तो कैसे या पापसों पावै मुक्तदराज॥ कहौ श्यामने हे हितू मिष्टाई पकवान। खावै तो दूषित नहीं रोटीमें मत जान॥ इन बासी रोटीनको खानो दुख उपजाय। पौत्र पुत्र को श्राप दे वह नर सुख ना पाय॥चार व्याध उत्पन्न हो जोनर सी खाय। आदि बुद्धिकी हानि हो दूजे तन घट जाय॥तीजो अरु बल हान हो चौथे खोजी खाट। इतने लक्षण पायके होवैबाराबाट॥

१२५ शिक्षा। हेअर्जुन जो मनुष्य इतनी बातन को अपने चित्तसों कभी न्यारी नहीं करे तो इस लोक और परलोकमें परम सुख पावै प्रथम स्वामी की सेवा में हंस मुख और निर्लोभ रहे दूजे चाकर के मन को दुखी न राखे तीजे क्रोध नहीं करै॥

❀ इति ज्ञानमाला समाप्त ❀

❀ वृहत् कौतुकरत्न भाण्डागार ❀

अर्थात्

इन्द्रजाल बड़ा

आजतक जितने इन्द्रजाल छपे हैं उन सबकी अपेक्षा इस में विशेष रूपसे क्रमबद्ध वर्णन किया गयाहै, इस पुस्तक के आठ भागहैं, सब से पाहिले ग्रंथ निबंध में अनेक ज्योतिष सम्बंधी विषय और छःओं कर्म मारण मोहन वशीकरणादि का वर्णनहै, प्रथम भागमें अनेकानेक उपयोगी मंत्रों का वर्णन है, दूसरे में सैकड़ों लाभकारी तन्त्र तथा तीसरे में अनेक यंत्र लिखे हैं चौथे में यक्षिणियों के साधन पांचवें में ताशों के अनेक प्रकार के खेल छटेमें अनेक प्रकारकी स्याहीबनानासातवें में मस्मेरेज्म (आत्मविद्या) का वर्णनहै आठवें में सैकड़ों प्रकार के जादू और खेल तमाशे लिखे गये हैं जन्त्र मन्त्र खेल तमाशे और जादूकी अनेक आश्चर्य पूर्ण बातोंसे यह पुस्तक भरी पड़ीहै इसका पूर्ण वर्णन स्थानाभावके कारण नहीं होसकताहै प्रारम्भमें नव दुर्गाओं के चित्र कलकत्ते की काली समेत दिये हैं पुस्तक बड़े कामकी और मनोरंजकहै पृष्ठ संख्या लगभग ६०० है मूल्य केवल १) है। डाक खर्च ।–) है।